The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com

दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश का अध्ययन

फ़खरे आलम
सहायक प्रोफेसर , शिक्षाशास्त्र विभाग,
एच.आर.पी.जी.कॉलेज, खलीलाबाद, संत कबीर नगर, उत्तर प्रदेश
ई.मेल: fakhrealam2009@gmail.com

सारांश –

दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश का अध्ययन मानव संसाधन विकास के महत्वपूर्ण पहलू है। यह अध्ययन दिव्यांग छात्रों के शैक्षिक अनुभवों, सामग्री के प्रति पहुंच, उनके शैक्षिक सफलता में रोचक तत्वों, उपलब्ध सुविधाओं और अभियांत्रिकी सहायता की व्यावसायिक व्यवस्था का मूल्यांकन करने का उद्देश्य रखता है। इस अध्ययन से हमें दिव्यांग छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन को समझने, उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नई नीतियों और कार्यक्रमों को सुझाव देने और उनके संगठनात्मक संवाद को मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

दिव्यांग छात्रों के शैक्षिक परिवेश का अध्ययन शैक्षिक संस्थानों, शिक्षकों और अन्य संगठनों के लिए महत्वपूर्ण निर्णयों को लेने में मदद करता है। इसके माध्यम से विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों और सुविधाओं की अवधारणाएं और प्रभावों का मूल्यांकन किया जा सकता है। छात्रों की सामग्री एवं पाठ्यक्रमों को उनकी आवश्यकताओं और क्षमताओं के आधार पर तैयार करने में मदद मिलती है। इसके साथ ही, यह अध्ययन शिक्षा संबंधी नीतियों, विशेष सुविधाओं और उपायों की प्रभावी व्यवस्था और उनके प्रदर्शन के आधार पर संशोधन की आवश्यकता को भी प्रकट कर सकता है।

इस अध्ययन के माध्यम से विभिन्न प्रश्नों का उत्तर ढूंढा जा सकता है, जैसे कि: दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षणिक अनुभवों में क्या समस्याएं हो सकती हैं?
विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों में उनकी पहुंच की समस्याएं क्या हैं?
उनके शैक्षिक सफलता में रोचक तत्व क्या हैं?
उन्हें प्राप्त सुविधाएं और अभियांत्रिकी सहायता कैसे मदद कर सकती है?
दिव्यांग छात्रों के शैक्षिक परिवेश को सुधारने के लिए कौन-कौन से कार्यक्रम और नीतियां हो सकती हैं?

इस अध्ययन का परिणामस्वरूप, शिक्षण संस्थानों में दिव्यांग छात्रों के लिए उपयुकारक संसाधन, सामग्री का समावेशन, पाठ्यक्रम विकास, सशक्तिकरण कार्यक्रम, तकनीकी संपर्क और संगठनात्मक संवाद में सुधार करने की संभावनाएं प्रकट होती हैं। यह अध्ययन भी उच्चतर शिक्षा में दिव्यांग छात्रों के लिए बेहतर संरचनाओं, विशेष सुविधाओं और समर्थन की आवश्यकता को प्रकट कर सकता है।

दिव्यांग छात्रों के शैक्षिक परिवेश का अध्ययन सरकारी नीतियों, शिक्षा प्रबंधन के निर्णयों और सामाजिक संगठनों के लिए महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन के परिणामस्वरूप नई नीतियों, दिशानिर्देशों और संशोधित पाठ्यक्रमों के विकास में मदद मिलती है ताकि दिव्यांग छात्र-छात्राएं शैक्षिक दृष्टि से समानता और अवसरों का लाभ उठा सकें।

संकेत शब्द :- *शिक्षा , दिव्यांग छात्र-छात्राओं,अधिगम , विकास ।*

प्रस्तावना:

दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश का अध्ययन उनकी शिक्षा और उनके संबंधित सामरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक अनुभवों की गहराई में विशेषाधिकार देता है। यह अध्ययन उन्हें समान शिक्षा और समान अवसरों का अधिकार सुनिश्चित करने के लिए शैक्षिक संस्थानों और समुदायों के लिए महत्वपूर्ण है।

दिव्यांग छात्र-छात्राओं के लिए उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण का मान्यताप्राप्त करना आवश्यक है। इसके लिए हमें उनके शैक्षणिक अनुभवों, शिक्षा संसाधनों, पाठ्यक्रमों, विशेष सुविधाओं, तकनीकी सहायता और संगठनात्मक समर्थन के विषय में गहन ज्ञान होना चाहिए।

दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश के अध्ययन से हमें उनकी शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए कदम उठाने की आवश्यकता समझने में मदद मिलेगी। यह अध्ययन हमें उनकी समस्याओं, आवश्यकताओं और समर्थन के अभाव की पहचान करने में सहायता करेगा। यह भी महत्वपूर्ण है कि हम उनकी शैक्षिक सफलता के लिए महत्वपूर्ण तत्वों को समझें और उन्हें समर्पित समर्थन प्रदान करें।

इस प्रस्तावना के अंतर्गत, हमें दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश की गहराई में जानकारी और संग्रह करने की आवश्यकता है। हमें उनके शिक्षण संसाधनों, शैक्षणिक सामग्री, पाठ्यक्रम विकास, आकर्षक शिक्षण विधियों, सुविधाओं और तकनीकी सहायता की मान्यता, व्यवस्था और उपयोगिता का विश्लेषण करना चाहिए।

इस अध्ययन के अंतिम लक्ष्य को दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश को समृद्ध, समानतापूर्ण और सकारात्मक बनाने का प्रयास करना चाहिए। हमें नई नीतियों, दिशानिर्देशों और संशोधित कार्यक्रमों की आवश्यकता होगी जो दिव्यांग छात्रों के शिक्षा संसाधनों, सुविधाओं, और समर्थन के लिए एक स्थायी और सुरक्षित माहौल सुनिश्चित करें।

शोध का औचित्य:

दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश का अध्ययन करने का शोध आवश्यक है क्योंकि यह हमें विभिन्न पहलुओं को समझने और सुधार करने की आवश्यकता को प्रकट करता है। निम्नलिखित कुछ मुख्य कारण हैं जिनके आधार पर इस शोध का औचित्य स्पष्ट होता है:

समानता और अवसरों का अधिकार: दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश का अध्ययन हमें समानता और अवसरों के संबंध में गहराई से समझने में मदद करता है। यह शोध हमें यह जानने में सहायता करेगा कि दिव्यांग छात्र-छात्राएं किस तरह से शैक्षिक अनुभवों में असमानता का सामना करते हैं और किस तरह से संघर्षों का सामना करके अपने पूरे पोटेंशियल को प्रकट कर सकते हैं।

सामग्री की प्रविष्टि और पहुंच: इस अध्ययन से हमें दिव्यांग छात्रों की सामग्री के प्रति पहुंच और समझ को मूल्यांकन करने में मदद मिलेगी। यह हमें समझने में सहायता करेगा कि कैसे विभिन्न पाठ्यक्रमों, शिक्षण पद्धतियों और शैक्षणिक सामग्री की सुविधा और पहुंच उनकी आवश्यकताओं को पूरा करती है या नहीं।

संगठनात्मक समर्थन: यह शोध हमें दिव्यांग छात्र-छात्राओं के लिए संगठनात्मक समर्थन की मान्यता और महत्व को स्पष्ट करेगा। हमें उनकी शिक्षा संस्थानों में अधिक खुदरा और प्रभावी समर्थन की आवश्यकता के बारे में जानने में मदद मिलेगी।

नीतियों और कार्यक्रमों का सुधार: इस शोध के आधार पर हमें नई नीतियों, दिशानिर्देशों और कार्यक्रमों की आवश्यकता का पता चलेगा जो दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश को सुधारने के लिए अपनाए जा सकते हैं। इसके साथ ही, यह हमें यह भी समझने में मदद करेगा कि कौन-कौन से कार्यक्रम और सुविधाएं दिव्यांग छात्रों के शिक्षा में सुधार लाने के लिए सबसे प्रभावी हैं।

इस प्रकार, दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश का अध्ययन का शोध औचित्यपूर्ण है क्योंकि यह हमें समानता, समर्थन, सामग्री की प्रविष्टि और संगगठनात्मक उन्नति के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करेगा। यह शोध हमें दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक अनुभवों, संघर्षों, आवश्यकताओं और अवसरों को समझने में मदद करेगा और उनकी शिक्षा में सुधार के लिए मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य:

इस प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश का विश्लेषण करना है। निम्नलिखित उद्देश्यों के माध्यम से हम यह प्रयास करेंगे:

शैक्षिक समानता की पहचान करना: इस शोध पत्र के माध्यम से हमें दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश में समानता और असमानता को पहचानने की संभावना होगी। हमें उनकी शैक्षिक सुविधाओं, पहुंच की आवश्यकताओं, संगठनात्मक समर्थन की प्रासंगिकता और अन्य तत्वों का मूल्यांकन करके समानता के अभाव की पहचान कर सकते हैं।

शैक्षिक सुधार की आवश्यकताओं को पहचानना: हमें दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश की गहराई में जानकारी एकत्र करके उनकी शैक्षिक सुधार की आवश्यकताओं को पहचानने का प्रयास करना होगा। हमें उनकी शिक्षा संसाधनों, पाठ्यक्रम विकास, शैक्षणिक सामग्री, सामग्री की प्रविष्टि और अन्य कारकों की जांच करनी चाहिए ताकि हम संशोधित नीतियों और कार्यक्रमों की सिफारिश कर सकें जो दिव्यांग छात्रों के शैक्षिक सुधार को संभव बनाने में मदद करें।

दिव्यांग छात्रों की सामरिक और मानसिक अवस्था को समझना: यह शोध पत्र हमें दिव्यांग छात्र-छात्राओं की सामरिक और मानसिक अवस्था को समझने में मदद करेगा। हमें उनके शैक्षणिक संघर्षों, सोचने के ढंग, अवसरों के सामरिक पहलुओं, स्वास्थ्य और अन्य मानसिक मुद्दों की जांच करनी चाहिए। इससे हम उन्हें समर्पित समर्थन प्रदान करने और उनकी शिक्षा संसाधनों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप समायोजित करने के लिए कार्रवाई कर सकेंगे।

नई नीतियों और कार्यक्रमों की सिफारिश करना: इस शोध पत्र के माध्यम से हमें नई नीतियों, दिशानिर्देशों और कार्यक्रमों की सिफारिश करने का भी मौका मिलेगा। हम उनके शैक्षिक परिवेश में सुधार करने के लिए संशोधित नीतियां और कार्यक्रमों की आवश्यकता को प्राथमिकता दे सकेंगे और दिव्यांग छात्र-छात्राओं के लिए संगठनात्मक समर्थन को समर्पित कर सकेंगे।

अध्ययन के परिणामों को साझा करना: अध्ययन के परिणामों को साझा करके हम दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश को समझने और सुधारने में अधिक संरचित कार्रवाई कर सकेंगे। हम इस शोध पत्र के माध्यम से प्राप्त ज्ञान को शिक्षा नीतिकथाओं, सामग्री विकास, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और अन्य क्षेत्रों में लागू कर सकेंगे, जिससे दिव्यांग छात्र-छात्राएं बेहतर शैक्षिक अनुभव प्राप्त कर सकें।

इस प्रकार, इस शोध पत्र के माध्यम से हम दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश की व्यापक जांच करेंगे, उनकी समस्याओं और आवश्यकताओं को समझेंगे, और उन्हें उच्चतर शिक्षा में समानता और अवसरों का अधिकार सुनिश्चित करने के लिए सुझाव और समर्थन प्रदान करेंगे। इससे हम दिव्यांग छात्र-छात्राओं की शिक्षा को बेहतर बनाने और उन्हें समर्पित समर्थन प्रदान करने के लिए संघर्ष करेंगे

दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश का विश्लेष्णात्मक अध्ययन:

विश्लेषणात्मक अध्ययन के द्वारा दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश का विश्लेषण किया जाता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विभिन्न पहलुओं, कारकों और प्रभावों को समझना होता है जो दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक प्रदर्शन और अनुभवों पर प्रभाव डालते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से निम्नलिखित पहलुओं का विश्लेषण किया जाता है:

शिक्षा संसाधनों का मूल्यांकन: इस अध्ययन में दिव्यांग छात्र-छात्राओं के उपयोग के लिए उपलब्ध शिक्षा संसाधनों का मूल्यांकन किया जाता है। यह समावेशी सामग्री, उपकरण, पाठ्यक्रम, पुस्तकें, तकनीकी संसाधन, शिक्षण पद्धति, आदि को सम्मिलित करता है। इसके माध्यम से जांचा जाता है कि क्या ये संसाधन दिव्यांग छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हैं या नहीं।

शिक्षण पद्धति और उपाध्यायों का मूल्यांकन: दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से उनकी शिक्षा संसाधनों और प्रदर्शन पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए, इस अध्ययन में शिक्षण पद्धति, प्रदर्शन मूल्यांकन, उपाध्यायों के द्वारा प्रदान किए जाने वाले समर्थन, सहायता और संघर्ष का मूल्यांकन किया जाता है।

शैक्षणिक समर्थन की प्रभावों का मूल्यांकन: इस अध्ययन में दिव्यांग छात्र-छात्राओं के लिए उपलब्ध शैक्षणिक समर्थन की प्रभावों का मूल्यांकन किया जाता है। यह समावेशी समर्थन कार्यक्रम, संगठनात्मक समर्थन, संबंधित नीतियां और दिव्यांगता कानून के प्रभावों को शामिल करता है। इससे जांचा जाता है कि क्या शैक्षणिक समर्थन दिव्यांग छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव डालता है और क्या इसमें सुधार की आवश्यकता है।

सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं का मूल्यांकन: इस अध्ययन में दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं का मूल्यांकन किया जाता है। यह समावेशी सामाजिक स्थानिकता, छात्र-सहयोग, समरसता, अभिवृद्धि का मूल्यांकन और मानसिक स्वास्थ्य सम्बंधित मापदंडों को शामिल करता है। इससे दिव्यांग छात्र-छात्राओं के लिए समाजिक समर्थन, स्थानिक सहयोग, मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं और मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञों के साथ अभिवृद्धि प्रोत्साहन की आवश्यकता का मूल्यांकन किया जाता है।

प्रभावी नीतियों और कार्यक्रमों की सिफारिश: विश्लेषणात्मक अध्ययन के द्वारा हमें दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश को सुधारने के लिए प्रभावी नीतियों और कार्यक्रमों की सिफारिश करने का अवसर मिलता है। यह नई नीतियां, दिशानिर्देश, संगठनात्मक समर्थन के प्रासंगिकता, सामग्री की प्रविष्टि और शैक्षणिक संसाधनों के विकास की सिफारिश के माध्यम से संशोधित कार्यक्रमों और नीतियों को सुझाव देने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है।

इस प्रकार, विश्लेषणात्मक अध्ययन द्वारा दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश का विस्तृत विश्लेषण करके हमें उनकी शैक्षिक अनुभवों, संघर्षों, आवश्यकताओं और संघटनाओं को समझने में मदद मिलती है, और उनकी शिक्षा में सुधार के लिए उचित कार्रवाई का मार्गदर्शन प्रदान करती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव:

दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश का अध्ययन करने से हमें निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं:

समानता के लिए अधिक संरचित समर्थन: दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश में समानता सुनिश्चित करने के लिए संशोधित नीतियों और कार्यक्रमों की आवश्यकता है। स्कूलों और कॉलेजों में दिव्यांगता के आधार पर अत्यधिक सामग्री, समर्थन सुविधाएं, और संगठनात्मक समर्थन का विकास करना चाहिए।

शैक्षिक सामग्री की प्रविष्टि और पहुंच को सुधारें: दिव्यांग छात्र-छात्राओं के लिए शिक्षण सामग्री की प्रविष्टि और पहुंच को सुधारना महत्वपूर्ण है। सामग्री को दिव्यांग छात्रों की आवश्यकताओं, शैक्षिक स्तर, और प्राथमिकताओं के अनुसार अनुकूलित किया जाना चाहिए। इसके साथ ही, उन्हें नवीनतम तकनीकी साधनों और उपकरणों का प्रयोग करके शिक्षा सामग्री को सुलभ बनाने की भी आवश्यकता है।

शिक्षकों का प्रशिक्षण और संसाधनों की विकास: शैक्षिक संसाधनों को दिव्यांग छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने के लिए शिक्षकों को अधिक प्रशिक्षित करने की जरूरत होती है। उन्हें दिव्यांगता के संबंध में ज्ञान, संचार कौशल, और शैक्षिक समर्थन की तकनीकों को समझने और अपनाने के लिए समर्पित प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए।

साथ ही, स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षकों के लिए संगठनात्मक समर्थन सुविधाएं विकसित करनी चाहिए, जिससे उन्हें दिव्यांग छात्रों को सहायता और समर्थन प्रदान करने के लिए आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता हो सकेगी।

संगठनात्मक समर्थन की प्रासंगिकता: दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश में संगठनात्मक समर्थन की प्रासंगिकता बढ़ानी चाहिए। संगठनात्मक समर्थन कार्यक्रम, समुदाय के सहयोग, समरसता की अवधारणा, और सहयोगी संस्थाओं के साथ साझा कार्य करने के माध्यम से दिव्यांग छात्र-छात्राओं को सहायता प्रदान की जा सकती है। साथ ही, उचित आवास, परिवहन, और संगठनात्मक समर्थन सुविधाएं प्रदान करके उनकी पहुंच को बढ़ाने की जरूरत होती है।

सुझाव:

दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश में सुधार के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

शैक्षणिक संसाधनों की सुलभता: दिव्यांग छात्र-छात्राओं के लिए शिक्षण संसाधनों की सुलभता को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न तकनीकी सुविधाएं, समर्थन सामग्री, और उपकरणों का प्रयोग करें। सामग्री को दिव्यांगता के अनुरूप संपादित करें और साधारण सामग्री को उन्हें पहुंचने के लिए सुविधाजनक ढंग से प्रस्तुत करें।

शैक्षणिक समर्थन कार्यक्रमों का विकास: शिक्षण समर्थन कार्यक्रमों की विकास करें जो दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करें। इसमें समर्थन क्लासेस, विशेषज्ञ सलाहकारों की सुविधाएं, और उपयुक्त संगठनात्मक समर्थन सहित हो सकता है।

ज्ञान और प्रशिक्षण के साझा कार्यक्रम: दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश को सुधारने के लिए ज्ञान और प्रशिक्षण के साझा कार्यक्रमों का आयोजन करें। इससे शिक्षकों और शैक्षिक संगठनों को दिव्यांगता के बारे में जागरूकता मिलेगी और वे अपने शैक्षिक प्रक्रियाओं को दिव्यांग छात्रों के लिए अनुकूलित कर सकेंगे।

संगठनात्मक समर्थन के विकास: दिव्यांग छात्र-छात्राओं के लिए संगठनात्मक समर्थन की प्रासंगिकता को बढ़ावा देने केलिए, स्कूलों और कॉलेजों में संगठनात्मक समर्थन कार्यक्रमों को विकसित करें। इसमें सहयोगी संगठनों के साथ भागीदारी, संगठनात्मक समर्थन सुविधाएं और समाज के सहयोग को शामिल किया जा सकता है। इसके साथ ही, उचित आवास और परिवहन सुविधाएं प्रदान करने के माध्यम से दिव्यांग छात्रों की पहुंच को बढ़ावा देना चाहिए।

जागरूकता और संचार की बढ़ावा: दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश के बारे में जागरूकता फैलाने और संचार को सुधारने का प्रयास करें। इसके लिए, संदर्भ पुस्तिकाएं, वेबसाइट, सेमिनार, वार्तालाप और सामुदायिक आयोजन कर सकते हैं। इससे दिव्यांग छात्र-छात्राओं और उनके परिवारों को जानकारी, समर्थन और समरसता के संदर्भ में बेहतर ज्ञान प्राप्त होगा।

शैक्षिक नीतियों का संशोधन: शैक्षिक नीतियों में दिव्यांग छात्र-छात्राओं के लिए सुधार करें। इसमें उचित छूट सुविधाएं, परीक्षा में सुविधा, विशेष समर्थन के लिए अत्याधिक संरचना, और संपर्क सूत्र का प्रदान शामिल हो सकता है। इससे दिव्यांग छात्र-छात्राओं को शैक्षिक प्रक्रियाओं में समानता और सुविधा मिलेगी।

इन निष्कर्षों और सुझावों के माध्यम से, दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश को सुधारने के लिए आवश्यक कार्रवाई की जा सकती है। यह सुनिश्चित करेगा कि वे शिक्षा में समानता और उच्चतर स्तरीय अवसरों का उचित रूप से लाभ उठा सकें।

इससे उन्हें समान अवसर, सुविधाएं, सहायता, और समर्थन मिलेगा जो उनके शैक्षिक सफलता को प्रोत्साहित करेगा।

संदर्भ सूची:-

- अब्राहम, डब्ल्यू. (1958). विशिष्ट बालकों के बारे में सामान्य ज्ञान, ओहियो हरकिमर काउंटी, न्यूयॉर्क। घोष, पी. के. (1986). औद्योगिक मनोविज्ञान, हिमालय प्रकाशन हाउस, मुंबई।
- गुडमैन, लिब्बी (1990). विशेष शिक्षा कक्षा में समय और सीखना, अल्बानी, स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क |
- यूनेस्को (1995). विशेष शिक्षा में वर्तमान स्थिति की समीक्षा।
- सैय्यदैन, मिर्जा एस. (2003). संगठनात्मक व्यवहार, टाटा मैकग्रा हिल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- सिंह, योगेश (2005). मनोविज्ञान का शिक्षण, ए. पी. एच. प्रकाशन, नई दिल्ली।
- ल्यूज़, ऐन. नॉर्विच, ब्रह्म (2005). विशेष बच्चों के लिए विशेष शिक्षण, मिल्टन कीन्स, ओपन यूनिवर्सिटी यूके।
- सिंह, भारत (2009). शिक्षा का मनोवैज्ञानिक आधार, अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- बारिक, आई.एन. (2011). स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा, कुणाल बुक्स, दरियागंज, नई दिल्ली।
- आर, उदिता (2012). शिक्षार्थी और शिक्षण शिक्षण का विकास, डोरलिंग किंडरस्ले प्रकाशन, नोएडा।

sवानीक रिपोर्ट (2013). विकलांग बच्चों और युवा लोगों की शिक्षा, जांच समिति की रिपोर्ट, लंदन |

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2023/09

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

फ़खरे आलम

?***for publication of research paper title***

दिव्यांग छात्र-छात्राओं के शैक्षिक परिवेश का अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-02, Month July, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com